नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पर्यटन : मध्य प्रदेश के लिए अवसरों की दस्तक

केंद्रीय बजट और हालिया घोषणाओं ने स्पष्ट संकेत दे दिया है कि भारत अब पर्यटन को केवल सांस्कृतिक गतिविधि नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के एक सशक्त स्तंभ के रूप में देख रहा है. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा आध्यात्मिक पर्यटन, बुनियादी ढांचे और विश्वस्तरीय गंतव्य विकास पर दिया गया जोर इस सोच का प्रमाण है. बिहार में विष्णुपद और महाबोधि कॉरिडोर, राजगीर और नालंदा का विकास हो या ओडिशा को विशेष सहायता, यह सब बताता है कि पर्यटन अब राष्ट्रीय विकास रणनीति का हिस्सा बन चुका है.

सरकार का 2047 तक भारत को वैश्विक पर्यटन नेता बनाने का लक्ष्य महत्वाकांक्षी है, लेकिन असंभव नहीं. 'चुनौती मोड' में 50 पर्यटन स्थलों का चयन, एक विशेष योजना के तहत धार्मिक शहरों का कायाकल्प, स्वदेश दर्शन 2.0 और कौशल विकास कार्यक्रम इस दिशा में ठोस कदम हैं. लगभग 2,479 करोड़ रुपए का बजट आवंटन यह दर्शाता है कि पर्यटन को गंभीरता से लिया जा रहा है.

ऐसे समय में, जब 18 फरवरी को मध्य प्रदेश का बजट प्रस्तुत होने वाला है, राज्य सरकार के सामने एक बड़ा अवसर खड़ा है. मध्य प्रदेश को यूं ही 'भारत का हृदय' नहीं कहा जाता. खजुराहो के विश्व धरोहर मंदिर, सांची का स्तूप, उज्जैन का महाकाल लोक, ओंकारेश्वर, चित्रकूट, अमरकंटक, मांडू की ऐतिहासिक विरासत, कान्हा और बांधवगढ़ के राष्ट्रीय उद्यान, पचमढ़ी की प्राकृतिक सुंदरता, यह सब मिलकर मध्य प्रदेश को बहुआयामी पर्यटन राज्य बनाते हैं.

पिछले कुछ वर्षों में महाकाल लोक परियोजना ने उज्जैन को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई है. यदि इसी तर्ज पर सांची, ओंकारेश्वर, चित्रकूट और अमरकंटक को एकीकृत आध्यात्मिक सर्किट के रूप में विकसित किया जाए, तो मध्य प्रदेश आध्यात्मिक पर्यटन का बड़ा केंद्र बन सकता है. साथ ही, इको-टूरिज्म और वन्यजीव पर्यटन को आधुनिक सुविधाओं और बेहतर कनेक्टिविटी से जोड़ा जाए, तो विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है.पर्यटन केवल स्मारकों और मंदिरों का संरक्षण नहीं है. यह एक व्यापक आर्थिक गतिविधि है. होटल उद्योग, परिवहन, स्थानीय हस्तशिल्प, गाइड सेवाएं, रेस्तरां, टूर ऑपरेटर, फोटोग्राफी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, हर क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं. एक अनुमान के अनुसार, पर्यटन क्षेत्र में निवेश का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार गुणक प्रभाव बहुत अधिक होता है. एक बड़े पर्यटन प्रोजेक्ट से हजारों प्रत्यक्ष नौकरियां और उससे कई गुना अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हो सकते हैं.

मध्य प्रदेश के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में होम-स्टे मॉडल, लोक कला और हस्तशिल्प आधारित पर्यटन, और स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भरता को मजबूती दी जा सकती है. यदि राज्य सरकार कौशल विकास कार्यक्रमों को पर्यटन से जोड़े, तो युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार मिलेगा और पलायन भी कम होगा.आगामी बजट में मध्य प्रदेश सरकार को पर्यटन के लिए पृथक और दूरदर्शी नीति, बेहतर सड़क और हवाई कनेक्टिविटी, डिजिटल प्रचार-प्रसार, और निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रोत्साहन योजनाएं लानी चाहिए. यदि केंद्र की योजनाओं के साथ तालमेल बैठाकर राज्य अपनी रणनीति बनाए, तो मध्य प्रदेश आने वाले वर्षों में देश का अग्रणी पर्यटन मॉडल बन सकता है.

पर्यटन केवल अर्थव्यवस्था नहीं, सांस्कृतिक आत्मविश्वास का भी आधार है. मध्य प्रदेश के लिए यह समय है कि वह अपनी विरासत और प्रकृति को विकास के इंजन में बदल दे. 18 फरवरी का बजट इस दिशा में निर्णायक साबित हो सकता है.

अविश्वास प्रस्ताव राजनीतिक चाल

श्याम यादव

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के खिलाफ विपक्ष की ओर से पेश किया गया अविश्वास प्रस्ताव संख्या बल के लिहाज़ से भले ही पारित नहीं हो, लेकिन इसका महत्व केवल मतदान के परिणाम तक सीमित नहीं है. यह प्रस्ताव संसद के भीतर शक्ति-संतुलन, संवैधानिक मर्यादाओं और संसदीय भरोसे जैसे बुनियादी प्रश्नों को सामने लाता है. यही कारण है कि इसे एक साधारण राजनीतिक कार्रवाई के बजाय संसदीय लोकतंत्र की कार्यप्रणाली से जुड़ी घटना के रूप में देखा जा रहा है.

> **लो**कसभा अध्यक्ष की भूमिका को अक्सर संदेह की नजर से देखा जाता है और यह माना जाता है कि वे सत्ताधारी पार्टी के पक्षधर के रूप में उनका साथ दे रहे हैं. यह कितना सही है या गलत यह बहस का अलग मुद्दा है. लेकिन, लोकसभा अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्तावना सिर्फ हार-जीत तक सीमित नहीं है बल्कि अध्यक्ष की भूमिका पर सवाल तो खड़े करता ही है!

विपक्ष का आरोप है कि हाल के समय में सदन की कार्यवाही के संचालन में सत्ता पक्ष को अपेक्षाकृत अधिक सुविधा मिली है, जबकि विपक्ष को सीमित अवसर दिए गए. प्रश्नकाल, अल्पकालिक चर्चाओं और स्थगन प्रस्तावों पर लिए गए निर्णयों को विपक्ष ने पक्षपातपूर्ण बताया है. उनका कहना है कि कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की अनुमति नहीं मिली, या फिर चर्चा को सीमित समय में समेट दिया गया. इसी असंतोष ने अविश्वास प्रस्ताव की पहल को जन्म दिया.

विपक्ष इस बात पर ज़ोर देता है कि यह कदम किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, बल्कि एक संवैधानिक पद की निष्पक्षता की रक्षा के लिए उठाया गया है. लोकसभा अध्यक्ष का पद भारतीय संसदीय व्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है. अध्यक्ष केवल सदन की कार्यवाही का संचालन ही नहीं करते, बल्कि यह भी सुनिश्चित करते हैं कि सत्ता और विपक्ष दोनों को अपनी बात रखने का समान अवसर मिले. उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सदन की गरिमा और सभी सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करें.

संसदीय परंपरा रही है कि अध्यक्ष चुने जाने के बाद सक्रिय राजनीति से दूरी बनाए रखें. व्यवहार में इसका अर्थ यह होता है कि अध्यक्ष अपने पूर्व राजनीतिक जुड़ाव से ऊपर उठकर कार्य करें और निर्णयों में निष्पक्षता का स्पष्ट संदेश दें. जब इस परंपरा को लेकर संदेह पैदा होता है, तब अविश्वास प्रस्ताव जैसा संवैधानिक उपकरण विपक्ष के हाथ में बचा एकमात्र औपचारिक विकल्प बन जाता है.

लोकसभा अध्यक्ष पर सत्ता पक्ष के प्रति झुकाव के आरोप कोई नए नहीं हैं. संसदीय इतिहास में इससे पहले भी ऐसे उदाहरण सामने आए हैं, जब अध्यक्षों के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाए गए. जीवी मावलंकर, हुकुम सिंह और बलराम जाखड़ के खिलाफ भी ऐसे प्रस्ताव पेश हुए थे, हालांकि वे अल्पमत के कारण पारित नहीं हो सके. इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि अविश्वास प्रस्ताव कोई असाधारण घटना नहीं, बल्कि संसदीय असहमति की एक स्थापित प्रक्रिया है. ओम बिड़ला के विरुद्ध प्रस्ताव को भी इसी परंपरा की कड़ी के रूप में देखा जा रहा है.

इस बार का मामला इसलिए भी चर्चा में है, क्योंकि विपक्ष ने इसे व्यापक राजनीतिक असंतोष से जोड़कर पेश किया है. उनका तर्क है कि संसद में बहस का स्तर और दायरा लगातार सिमटता जा रहा है, और अध्यक्ष की भूमिका इस प्रक्रिया में निर्णायक होती है. यदि अध्यक्ष पर भरोसा कमजोर होता है, तो इसका असर केवल सदन की कार्यवाही पर नहीं, बल्कि संसद की साख पर भी पड़ता है.

दूसरी ओर सत्ता पक्ष का कहना है कि अध्यक्ष ने संविधान और नियमों के अनुरूप ही निर्णय लिए हैं और अविश्वास प्रस्ताव विशुद्ध रूप से राजनीतिक दबाव बनाने का प्रयास है. सत्ता पक्ष का तर्क है कि कार्यवाही संचालन में नियमों का पालन किया गया है और विपक्ष द्वारा बार-बार हंगामे और व्यवधान के कारण सदन सुचारु रूप से नहीं चल पाया. उनके अनुसार, अध्यक्ष को नियमों के तहत निर्णय लेने का अधिकार है और हर असहमति को पक्षपात कहना उचित नहीं है. इन दोनों दावों के बीच असली प्रश्न यह है कि संसद जैसी संस्था में भरोसे को कैसे बनाए रखा जाए. अविश्वास प्रस्ताव भले ही पारित न हो, लेकिन यह एक संवैधानिक संकेत अवश्य देता है. यह संकेत इस ओर है कि संसद के भीतर संवाद और संतुलन को लेकर असंतोष मौजूद है.

यदि ऐसे संकेतों को केवल राजनीतिक शोर मानकर नज़रअंदाज़ किया जाता है, तो यह स्थिति भविष्य में और अधिक टकराव को जन्म दे सकती है. अंततः, लोकसभा अध्यक्ष के विरुद्ध लाया गया यह प्रस्ताव एक राजनीतिक घटना से अधिक एक संवैधानिक संदेश है. यह संदेश यह याद दिलाता है कि संसदीय परंपराएँ केवल लिखित नियमों और प्रक्रियाओं से नहीं चलतीं, बल्कि विश्वास, संतुलन और संवाद से जीवित रहती हैं. इन्हें बनाए रखना केवल अध्यक्ष की नहीं, बल्कि सत्ता और विपक्ष, दोनों की साझा जिम्मेदारी है. संसद की मजबूती इसी में है कि असहमति को भी लोकतांत्रिक मर्यादा के भीतर स्थान मिले और संस्थागत भरोसा कमजोर न पड़े.

एसआईआर पर ममता का रुख नरम

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के मुद्दे पर टीएमसी प्रमुख व बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के रवैये से कुछ नरमी देखी जा रही है. उन्होंने इस कार्य में भारत के निर्वाचन आयोग के 800 अधिकारियों के सहयोग का प्रस्ताव दिया है. सुप्रीम कोर्ट के सामने ममता ने सरनेम में बदलाव की वजह से लोगों के नाम मतदाता सूची से काटे जाने का मुद्दा उठाया था तथा काम के बोझ व तनाव से अनेक बीएलओ की मौत पर चिंता जताई थी. उन्होंने बंगाल के सीमावर्ती जिलों में अल्पसंख्यकों व प्रवासियों को निशाना बनाने का भी आरोप लगाया था.

ममता ने एसआईआर को राजनीति से प्रेरित बताते हुए कहा था कि इसका लोकतंत्र पर गंभीर परिणाम हो सकता है. सुप्रीम कोर्ट ने ममता की दलीलों को सुना और एसआईआर में पारदर्शिता व उचित कार्यप्रणाली पर जोर दिया. साथ ही चुनाव आयोग की स्वायत्तता को रेखांकित करते हुए एसआईआर पर रोक लगाने से मना किया. ममता बनर्जी ने भी अपने राज्य के 8,000 अधिकारियों के सहयोग का ऑफर देकर चुनाव आयोग से टकराव की बजाय तालमेल का रास्ता अपनाया है. वह चाहती हैं कि विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया में चुनाव आयोग के पास पर्याप्त स्टाफ उपलब्ध हो. ये अधिकारी राज्य प्रशासन के प्रति उत्तरदायी होंगे और राज्य सरकार इनके जरिए एसआईआर की प्रक्रिया पर नजर भी रख सकेगी. इससे आपसी टकराव की बजाय केंद्र-राज्य सहयोग भी बना रहेगा. ममता बनर्जी इसी संतुलन को साधना चाहती हैं. इसे उनका केंद्र के सामने आत्मसमर्पण नहीं माना जा सकता. वास्तव में वह एसआईआर की प्रक्रिया में अपने अधिकारियों को सम्मिलित कर यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि मनमाने तौर पर बंगाल के मतदाताओं के नाम सूची से न काटे जाएं. ऐसे में किसी व्यक्ति का सरनेम अपने पूर्वजों से अलग या संक्षिप्त होने को मुद्दा नहीं बनाया जाएगा. यदि कोई बंदोपाध्याय, मुखोपाध्याय, चट्टोपाध्याय को क्रमशः बनर्जी, मुखर्जी या चटर्जी लिखता है अथवा वसु को बोस, भट्टाचार्य को भट्टाचार्जी लिखे तो उसे मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जाएगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

निकाय चुनाव से पहले चंबल में संगठन दुरुस्त करने की कवायद

हरीश दुबे

ग्वालियर चंबल में इन दिनों प्रदेश के बड़े कांग्रेस नेताओं का आना जाना लगा है. टारगेट अगले साल होने वाले नगर निगम चुनाव हैं. जीतू पटवारी 14 को ग्वालियर और शिवपुरी के बॉर्डर पर बसे मोहना नगर में जनाक्रोश रैली करेंगे तो पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने आज से चार दिनों के लिए ग्वालियर में डेरा डाल दिया है. आज वे नेताओं के घरों पर जाकर मेल मुलाकात में व्यस्त रहे. वे भिंड मुरैना भी जाएंगे. पटवारी की रैली के दिन वे दतिया में रहेंगे. पार्टी के विभागों, प्रकोष्ठों के प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह चौहान भी ग्वालियर में ही डेरा डाले हुए हैं. यह कहने में गुरेज नहीं कि सिंधिया के अपनी टीम के साथ पार्टी छोड़ भाजपा में जाने के बाद अंचल में कांग्रेस कमजोर हुई है. संगठनात्मक ढांचा भी कमजोर पड़ा है. यही वजह है कि प्रदेश कांग्रेस ने ग्वालियर चंबल पर ध्यान केंद्रित कर दिया है. पार्टी ने जनाक्रोष रैली के लिए मोहना का चयन सुनियोजित रणनीति के तहत किया है. मोहना से बहने वाली सियासी हवा ग्वालियर जिले की भितरवार, डबरा और ग्वालियर देहात सीटों के अलावा शिवपुरी जिले को भी प्रभावित करती है. यही वजह है कि इससे पहले पार्टी ने नौ जनवरी को भी यहां पटवारी की रैली का कार्यक्रम रखा था लेकिन तब प्रशासन ने ऐन मौके पर अनुमति नहीं दी थी, इस बार अनुमति मिल गई है. रैली को कामयाब बनाने ग्रामीण कांग्रेस के सदर प्रभूदयाल जौहरे और यहां से एक बार फिर से विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटे पूर्व मंत्री लाखन सिंह यादव अगले तीन रोज तक के लिए मोहना में ही जमे हैं.

धर्म के रास्ते नरोत्तम का डबरा रिटर्न-सूबे की काबीना में होम और हैल्थ के साथ तमाम वजनदार महकमे संभाल चुके डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने अपने गृहनगर डबरा में नवग्रह मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में बागेश्वर बाबा, पं. प्रदीप मिश्रा, दाती महाराज जैसी शीर्षस्थ अध्यात्म विभूतियों के साथ अपने विशिष्ट अंदाज में रामकथा कहने वाले कवि कुमार विश्वास को बुलाकर फिलवक्त यह साबित कर दिया है कि वे राजनीतिक क्षेत्र के साथ धार्मिक जगत में भी असर रखते हैं. नरोत्तम पिछला विधानसभा चुनाव हार गए थे. इसके बाद दो बार राज्यसभा के टिकट के लिए उनका नाम चला लेकिन उम्मीद मुकम्मल नहीं हुई. भगवा दल की सूबाई सदारत भी हाथ से फिसल गई. कुछ शुभचिंतकों ने उन्हें हाशिए पर मान लिया और इसी दरम्यान नवग्रह मंदिर की स्थापना और इसकी प्राण प्रतिष्ठा के भव्यतम आयोजन को उनके कथित राजनीतिक पुनर्जीवन के प्रयासों से जोड़कर दर्शाया जा रहा है लेकिन नरोत्तम को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. वे कहते हैं कि डबरा उनकी जन्म और कर्मभूमि है और यहां की खुशहाली के लिए हो रहे आयोजन में भी कोई राजनीति तलाशे तो उनका कसूर क्या ! वैसे नरोत्तम के लिए राजनीतिक पराभव भुगतने के बाद खुद को फिर से स्थापित करना कोई नई बात नहीं है. डबरा के रिजर्व होने बाद उन्होंने दतिया को अपना निर्वाचन क्षेत्र बनाया था, इसके बाद डबरा के राजनीतिक मामलों से वे दूर ही रहते थे लेकिन बरास्ते धार्मिक आयोजन ही सही, डबरा में उनकी मौजूदा सक्रियता ने कांग्रेस के अलावा उन भाजपाई मित्रों में भी बेचैनी पैदा कर दी है जो नरोत्तम के दतिया जाने के बाद डबरा को खुला मैदान मान रहे थे. अगले परिसीमन में डबरा के सामान्य सीट घोषित होने की अटकलें भी लगाई जा रही हैं.

लंबे इंतजार के बाद भी निराशा नसीब-आखिर साल भर के लंबे इंतजार के बाद भाजपा की शहर और देहात इकाइयों की कार्यकारिणी घोषित हो गई. नरेंद्र सिंह के समर्थकों की भरमार के साथ सिंधिया कोटे से सतेंद्र शर्मा, केशव मांझी और पवैया के नजदीकी माने जाने वाले कनवर किशोर भी जगह पा गए हैं, उधर देहात की इकाई में नरोत्तम मिश्रा के भतीजे विवेक को उपाध्यक्षी मिली है.

अशोक सिंह का नाम नदारत, कांग्रेस आग बबूला

सरकार द्वारा बनाई ग्वालियर विकास सलाहकार समिति में सभी वरिष्ठ स्थानीय जनप्रतिनिधियों को जगह दी गई लेकिन राज्यसभा सदस्य अशोक सिंह को वंचित कर दिया गया. कांग्रेस इस पर आगबबूला है. पार्टी दफ्तर पर समन्वय समिति की मीटिंग में यही मुद्दा गर्म रहा. तय हुआ कि इस मसले पर प्रभारी मंत्री सिलावट से मिला जाए. कांग्रेस की इस कवायद पर भाजपा के एक नेता का कमेंट है कि यह तो साबित हुआ कि सरकार द्वारा बनाई जिला विकास सलाहकार समिति को कांग्रेसवाले गंभीरता से ले रहे हैं, वरना अभी तक तो ग्वालियर के विकास से जुड़े हर सरकारी फरमान को हवा में ही उड़ाया जा रहा था.

निशानेबाज

पीएम से अनहोनी का बेतुका बयान महिला सांसदों ने माना अपमान

पड़ोसी ने हमसे कहा, %निशानेबाज, हमें लगता है कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला महिला शक्ति से आशंकित व आतंकित हैं. वह 56 इंच की छाती वाले प्रधानमंत्री मोदी के रक्षा कवच बने हुए हैं. बिड़ला ने कहा कि लोकसभा में आने से खुद उन्होंने पीएम को मना किया था क्योंकि उनके साथ विपक्षी महिला सांसद कोई अनहोनी कर सकती थीं.

हमने कहा, यह सब कपोलकल्पना है आज तक ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि किसी महिला सांसद ने पीएम या किसी मंत्री को कभी हाथ तक लगाया होगा. यदि महिला सांसद विरोध जताते हुए अध्यक्ष के सामने वेल तक पहुंच गईं तो यह कोई नई बात नहीं है. इतने वर्षों के संसदीय इतिहास में विपक्षी सदस्य कितनी ही बार नारे लगाते हुए अपनी सीट से उठकर वहां तक जा पहुंचे. बिड़ला ने पीएम के साथ कोई अप्रिय स्थिति या अनहोनी होने की बात कैसे सोच ली? यह तो अपनी लोकप्रियता के बल पर निर्वाचित होने वाली महिला सांसदों पर व्यर्थ का दोषारोपण करना हुआ. यह सोचना ही हास्यास्पद है कि जिम्मेदार महिला सांसद पीएम पर हमला करेंगी. इसके पहले संसदीय इतिहास में किसी भी स्पीकर ने महिला सांसदों पर इस तरह का बेतुका आरोप नहीं लगाया था. महिलाओं से पीएम को खतरा होने की कल्पना किसी के गले नहीं उतरेगी.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, प्रियंका गांधी ने लोकसभा अध्यक्ष पर महिला सांसदों का अपमान करने का आरोप लगाया और कहा कि स्पीकर पर दबाव है जिसकी वजह से उन्होंने पीएम की सुरक्षा के लिए खतरे का बयान दिया. इस मुद्दे पर कांग्रेस अपने सहयोगी दलों से बात कर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी कर रही है.

सपा, राजद, डीएमके सहित कई दलों ने कांग्रेस को भरोसा दिया है कि इस मुद्दे पर उनके साथ रहेंगे. अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे पर सांसदों से हस्ताक्षर लिए जा रहे हैं. प्रियंका का कहना है कि प्रधानमंत्री मोदी की हिम्मत नहीं हुई कि लोकसभा में आकर जनता के सवालों का जवाब दें. लोकसभा अध्यक्ष पर भारी दबाव है. उनसे यह बयान सरकार ने दिलाया. प्रियंका ने कहा कि उन्हें मिलाकर कांग्रेस की 11 महिला सांसद हैं, जो सभी गंभीर महिलाएं हैं. ऐसा नहीं है कि कोई भी महिला सांसद जाकर पीएम को कुछ करेंगी.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12169 - डॉ. सागर खादीवाला

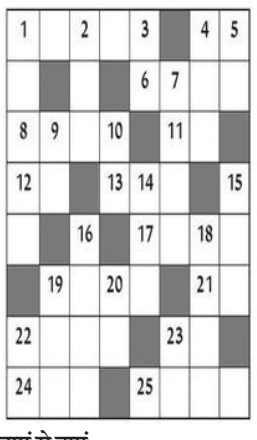

ऊपर से नीचे
1. (संपत्ति स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में दिया जाना (सं.) 2. लड़ाई, झगड़ा 3. वह मानसिक अवस्था जो शराब, भांग आदि के पीने से होती है 4. वह गीत जिसमें किसी देवता या ईश्वर के गुणों का कीर्तन हो 5. उस जगह, उस स्थान पर 7. हार्दिक कामना (उर्दू) 9. ओष्ठ, होंठ (उर्दू) 10. तिलक, व्याख्या 14. नियम से बंधना, अरब का एक प्रदेश 15. पाठ, शिक्षा, नसीहत (उर्दू) 16. अचंभा, आश्चर्य 18. इधर-उधर झोंका खाते हुए चलना, हिलोरे मारना 19. सहारा, वह जिसके सहारे कोई वस्तु बनी या ठहरी हो 20. निषिद्ध, वर्जित (उर्दू) 22. अच्छी बुद्धिवाला, पंडित व्यक्ति (सं.) 23. स्वच्छ, निर्मल (उर्दू)

बाएं से दाएं
1. वस्तुतः, सत्यतः, हकीकत में (उर्दू) 4. जन्म, उत्पत्ति, संसार, जन्म-मरण का दुख (सं.) 6. शहंशाह जिसने अपनी बेगम की याद में अप्रतिम मकबरा बनवाया 8. पहाड़ के नीचे की भूमि 11. जूट 12. ईश्वर, परमेश्वर (उर्दू) 13. डरपोक, भीरू 17. अभिप्राय, आशय, तात्पर्य (उर्दू) 19. धार्मिक पूजाओं में मंत्र पढ़कर जल पीना 21. अधिकार, उचित या ठीक बात या पक्ष (उर्दू) 22. दीप या बुराई दूर करना 23. संपूर्ण, समस्त 24. धैर्य 25. भयानक, दहशत पैदा करने वाला (उर्दू)

Solution 12168

सं	जी	व	क		सं	ता	न
वि	व	र		तं	ग		
धा		मा		बू	म	रें	ग
न		ला	ख				म
	क		स	म	र		गी
चं	द्र	शे	ख	र		ची	न
	दा		स	घ	न		
वि	न	य		ट	ख	ना	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनावश्यक वाद विवाद होगा. मन में तनाव रह सकता है. व्यर्थ चिन्ताओं से कार्य में व्यवधान आयेगा. व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी. आकस्मिक क्रोध की स्थिति बन सकती है. शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है. वर्ष के अन्त में नये स्त्रोतों मेंवृद्धि होगी. रूके कार्यों में गति आयेगी. धार्मिक कार्यों में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आय के नवीन स्त्रातों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारी के सहयोग से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को अनावश्यक विवादहो सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों के रूके कार्यों में गति आयेगी.

मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शुभ समाचार मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ का वाद विवाद से मुक्ति मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ अधिक होगी. अत्याधिक क्रोध की स्थिति न आने दें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य सुन्दर, अच्छे संस्कारों और विचारों का होगा. स्वास्थ्य ठीक रहेगा. बचपन में ज्वर, अतिसार, निमोनिया, आदि से तकलीफ होगी. किसी विशेष विज्ञान कला आदि का ज्ञाता होगा. किसी के दबाव में आकर काम नहीं करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

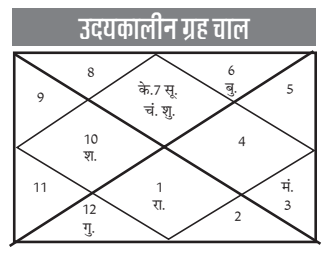

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण दशमीं गुरूवासरे दिन 11/33, ज्येष्ठा नक्षत्रे दिन 1/12, हर्षण योगे रात 2/49, विष्टि करणे सू.उ. 6/27, सू.अ. 5/33, चन्द्रचार वृश्चिक दिन 1/12 से धनु, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1, 4,5,7 शुभांक- 0,3,7.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण दशमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, अलसी, अरंडी, बिनौला, घी, मूँगफली, तेल, गुड़, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. रूई, कपास, सूत लकडी, से बनी वस्तुओं में वृद्धि होगी. भाग्यांक 3721 है.

मेष- बुजुर्गों के मार्गदर्शन से अच्छी सफलता मिलेगी, अहंकार, मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. कामकाज में उत्साह बना रहेगा. दौड़धूप से बचना चाहिये.

वृषभ- जल्दबाजी में लाभदायक योजना का फायदा कम मिलेगा. अधिक भरोसे से बचें. कौटुम्बिक सुख मिलेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लेना उपयोगी रहेगा.

मिथुन- अटके कार्य मित्रों के सहयोग से पूरे होंगे. पुराने मामले सुलझेंगे. आपके साहस और पराक्रम में वृद्धि होगी. कोई भी कामकाज कल पर न टालें. परिश्रम अधिक होगा.

कर्क- जनहित को ध्यान में रखकर निर्णय करें. प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी. प्रापर्टी के कार्यों में सावधानी रखें. किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात होगी.

सिंह- कार्य क्षेत्र में बर्चस्व बढ़ेगा. मित्रों से किया गया वादा पूरा नहीं होगा. विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आर्थिक एवं व्यापारिक कामकाज पूरा होगा.

कन्या- सामाजिक जीवन में खास पहचान बनेगी. धार्मिक यात्रा संभव है. मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. निजी पुरूषार्थ रहेगा. विरोधी वर्ग उग्र रूप धारण कर सकता है.

तुला- लापरवाही से नुकसान उठाना पड़ सकता है. किसी समारोह में शामिल होंगे. घरेलू वातावरण सुखद एवं आनन्ददायक रहेगा. व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा.

वृश्चिक- विद्यार्थी वर्ग के लिये समय अच्छा है. उन्नति के अवसर मिलेंगे. शारीरिक कष्ट एवं कार्य की व्यस्तता रहेगी. खानपान आदि में सतर्कता रखें.

धनु- रूखे व्यवहार से करीबी नाराज होंगे. वाणी पर नियंत्रण रखें. आध्यात्मिक कार्यों में उत्साह बना रहेगा. भाईयों की मदद मिलेगी. आत्मीयता बढेगी.

मकर- कार्यक्षेत्र में किये गये बदलाव का अच्छा लाभ मिलेगा. सुख सुविधा पर खर्च होगा. राजकीय कार्यों में व्यस्तता रहेगी. महिला जाति की सलाह लें.

कुंभ- आयात निर्यात के कार्य में अच्छे लाभ की संभावना है. आय के साधनों में वृद्धि होगी. किये गये कार्य का लाभ प्राप्त होगा. पारिवारिक कार्य संतोषप्रद रहेगा.

मीन- मेहनत के अनुकूल लाभ मिलना मुश्किल है, अध्ययन, कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. खर्च की अधिकता रहेगी, पारिवारिक कार्यों पर उचित ध्यान दें.

SUDOKU 7301

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7300

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7